अमरीका में हुए पत्रकार सम्मेलन में प्रधानमंत्री का प्रारंभिक वक्तव्य

24 सितम्बर, 2004

न्यूयार्क

"मुझे खुशी है कि आप लोग इस सम्मेलन में उपस्थित हुए हैं । मुझे हर्ष है कि इस दौरे के संबंध में अपने विचारों का आपके साथ आदान-प्रदान करने का अवसर मिला है । मैं मानता हूँ कि यह दौरा बहुत ही उपयोगी रहा और कई महत्वपूर्ण नेताओं - सरकार के और उद्योग एवं व्यवसाय से जुड़े नेताओं, के साथ परस्पर बातचीत करने की यह शुरूआत मेरे लिए बहुत ही लाभदायक रही ।

ब्रिटेन में मैं बहुत कम समय के लिए रूका, वहाँ कई महत्वपूर्ण बैठकें हुईं । प्रधानमंत्री ब्लेयर से मेरी मुलाकात हुई और संयुक्त वक्तव्य, जिसमें उच्च स्तर पर भारत और ब्रिटेन की भागीदारी - एक व्यापक कार्यनीति संबंधी भागीदारी, पर सहमति व्यक्त की गई और उसे जारी किया गया । इससे दोनों देशों की सरकारों के बीच आदान-प्रदान को आधार मिला है - हमने प्रतिवर्ष शीर्ष स्तर पर परस्पर बातचीत और नियमित एवं सतत विकास, व्यवसाय और आर्थिक सहयोग, भारत के नाभिकीय ऊर्जा कार्यक्रम में यथासंभव सहयोग और इसी तरह के अन्य कार्यक्रमों में सहयोग करने पर विचार किया है । आप सबने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट के लिए भारत की उम्मीदवारी का समर्थन करने वाले देश ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ब्लेयर की स्पष्ट शब्दों में की गई टिप्पणी सुनी है । प्रधानमंत्री ब्लेयर ने मुझे यह भी कहा कि वे जी-8 और भारत (तथा चीन) के बीच निकट संबंध स्थापित करने के उपाय ढूंढने के इच्छुक है ।

ब्रिटेन में परस्पर बातचीत के सत्र में मेरी प्रभावशाली मुख्य कार्यपालक अधिकारियों, अर्थशास्त्रविदों और विश्लेषकों से मुलाकात हुई । इस सत्र में हमने आर्थिक सुधारों के बारे में अपने-अपने विचार व्यक्त किए । मेरे विचार से, इस बारे में कोई संदेह नहीं है कि आर्थिक सुधार निरंतर जारी रहते हैं और यह एक अनवरत प्रक्रिया है । लेकिन यदि जनता के मन में इस बारे में कोई चिंता है तो मुझे उनसे मिलकर अपने विचार उन्हें बताने में प्रसन्नता होगी । मेरा विश्वास है कि ब्रिटेन में हुई बैठकों में मैं ऐसा करने में समर्थ रहा हूँ ।

मेरे न्यूयार्क पहुँचने के समय के बाद से यहाँ भी कई महत्वपूर्ण बैठकें और कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनके बारे में मैं संक्षेप में आपको बताना चाहूँगा । यू एन जी ए की सामान्य चर्चा में भाग लेने के लिए मेरे लिए यह दौरा करना जरूरी था । आप सब जानते हैं कि कल यह बैठक हुई । इसमें मैंने मुख्य रूप से बहुदेशीय और इसे मूर्त रूप देने वाले - संयुक्त राष्ट्र संघ और संयुक्त राष्ट्र सुधार प्रक्रिया के प्रति भारत की वचनबद्धता को दोहराया है ताकि यह निकाय आज के समय के अनुरूप अपने को पुनर्गठित कर सके और इस संबंध में मैंने ऐसे तर्क भी प्रस्तुत किए जिनके आधार पर मैं मानता हूँ कि भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य होना चाहिए । विश्व समुदाय में अपनी साख और भूमिका बनाने के लिए उपयुक्त दायित्वों और जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए अपनी इच्छा पर भी बल दिया ।

मैं प्रधानमंत्री कोईजुमी (Koizumi) द्वारा आयोजित बैठक को भी बहुत महत्वपूर्ण समझता हूँ जिसमें मैंने ब्राजील के राष्ट्रपति लुला (Lula) और जर्मनी के उप प्रधानमंत्री फिशर (Fischer) के साथ भागा लिया । सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता

के लिए एक दूसरे का समर्थन करके संयुक्त राष्ट्र सुधार प्रक्रिया में भाग लेने के लिए हम चारों देशों द्वारा किए गए समझौते की दृष्टि से यह जी-4 बैठक अत्यंत महत्वपूर्ण रही । यद्यपि हम इस प्रक्रिया के परिणाम तक नहीं पहुंच सके लेकिन हम इसमें लगे रहेंगे ।

संयुक्त राष्ट्र के महासचिव कोफी अन्नान (Kofi Annan) के साथ हुई बैठक भी काफी महत्वपूर्ण रही जिसमें हमने संयुक्त राष्ट्र सुधार प्रक्रिया पर चर्चा की और मैंने इसे सार्थक तरीके से आगे बढ़ाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया ।

दूसरी ओर 21 सितम्बर को राष्ट्रपति बुश के साथ हुई बैठक इस दौरे का सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम था । उन्होंने भारत-अमरीका संबंधों को मजबूत बनाने के लिए व्यक्तिगत तौर पर सहयोग देने की बात कही और मैं इस बात की सराहना करता हूँ कि उन्होंने अपने चुनावी कार्यक्रमों के बीच मुझ से मुलाकात की । मैंने आपसी संबंधों को मजबूत बनाने में, विशेषकर कार्यनीतियों के संबंध में, अपनी इच्छा जाहिर की है । हमारी बैठक से ठीक पहले एन एस एस पी के पहले चरण के अंत में इस संदेश को रेखांकित किया गया है ।

यद्यपि चर्चा के दौरान बहुत से मुद्दों पर बात की गई, उनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दे आतंकवाद, डब्ल्यू एम डी का बढ़ना और उससे संबद्ध वैश्विक चुनौतियों का मिलजुलकर मुकाबला करने की वचनबद्धता है । मेरा मानना है कि राष्ट्रपति बुश ने मेरे इस प्रयास का पूरा समर्थन किया है कि दोनों देशों के बीच परस्पर सहयोग और विश्वास बनाया जाए । मुझे विश्वास है कि ऐसा करने से विश्व को बेहतर बनाने के

लिए एक-दूसरे के साथ काम करते हुए हमारे द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ बनाने की बहुत अधिक संभावना होगी ।

न्यूयार्क शेयर बाजार में अमरीका के मुख्य कार्यपालकों के साथ हुई बैठक में मैंने अपनी यह धारणा भी व्यक्त की कि हमारे आर्थिक संबंधों को मजबूत बनाने के कई नए अवसर सामने हैं । जैसाकि आप सब जानते हैं कि मुझे इससे इस बात पर बल देने का अवसर मिला कि एक बहुत ही आकर्षक निवेश स्थल के रूप में भारत की बहुत साख है । कल भारत और अमरीका के मुख्य कार्यपालकों के साथ हुई मेरी बातचीत सुधार और विकास संबंधी हमारी योजनाओं को अधिक सकारात्मक रूप देने की दृष्टि से बहुत ही लाभदायक रही । आज भारत के सामने जो चुनौतियाँ हैं उनका सामना करने के लिए मैं उनके अनुभव और सर्जनात्मक योग्यता का लाभ उठाना चाहता हूँ । मेरा प्रस्ताव है कि उन्हें एक ऐसा ग्रुप बनाना चाहिए जो हमें यह सुझाव दें कि हमें प्रतिवर्ष 10 बिलियन डालर का एफ डी आई प्राप्ति का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए ।

भारत-अमरीका भागीदारी के मूलभूत सिद्धांतों के संबंध में हमारे विचार विदेश-संबंध परिषद् में दिए गए अभिभाषण में अभिव्यक्त किए गए । इस देश में भारतीय समुदाय के साथ हुई मेरी बैठकों से यह पता चला कि वे दोनों देशों के बीच सेतु का काम करते हैं । मैं अमरीका के यहूदी समुदाय के नेताओं से भी मिला क्योंकि वे हमारे हितों का विशेष रूप से समर्थन करते हैं ।

इनके अलावा "यू एन जी ए" के संबंध में - मैं अफगानिस्तान के राष्ट्रपति हामिद करजाई (Hamid Karzai) से मिला और अगले माह अफगानिस्तान में होने वाले राष्ट्रपति पद के चुनावों और अफगानिस्तान के विकास और पुनर्गठन के लिए मैंने अपना समर्थन व्यक्त दिया ।

दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति थाबो म्बेकी (Thabo Mbeki) से भी मेरी मुलाकात हुई । आप जानते है कि पिछले ही सप्ताह हमारे राष्ट्रपति दक्षिण अफ्रीका में थे । मैंने इस अवसर का लाभ उठाते हुए राष्ट्रपति म्बेकी से मुलाकात की और अपने वैश्विक दृष्टिकोण, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र सुधारों के प्रति सामान्य दृष्टिकोण जानने की कोशिश की ।

आज मेरी राष्ट्रपति मुशर्रफ से भी मुलाकात हुई थी । मैं इसके बारे में पहले बता चुका हूँ । यहाँ इतना कहना पर्याप्त होगा कि हम दोनों इस बात से सहमत हैं कि दोनों देशों के बीच अनिर्णीत मुद्दों का हल ढूंढने का एकमात्र रास्ता बातचीत है । भारत इन समस्याओं का हल ढूंढने के लिए पूरी तरह से इच्छुक है क्योंकि इनसे देश में पिछले काफी समय से अशांति बनी हुई है । हम दोनों ही इस दृष्टिकोण पर सहमत हैं ।

जैसा कि मैंने कहा, मैं इस दौरे के परिणामों से पूरी तरह संतुष्ट हूँ । मेरी सभी बैठकों में भारत के दृष्टिकोण और हितों को उजागर किया गया और मैंने अनुभव किया कि मेरी सभी मुलाकातों में मेरे विचारों को मान्यता दी गई क्योंकि आज के प्रमुख मुद्दों पर बातचीत करने में भारत की अहम भूमिका है ।"